Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 3

आधुनिक भारत

SIERRA INNOVATIONS

आधुनिक भारत

क्र.स.	अध्याय	पेज न.
यूनिट- 2 (प्रीलिम्स) स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन		
Unit-2 (मेन्स) भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव।		
1.	**भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना** • भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन • भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार	1
2.	**ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था** • कपड़ा उद्योग और व्यापार • ब्रिटिश भारत में भू-राजस्व प्रणाली • भारतीय कृषि पर राजस्व प्रणाली का प्रभाव • व्यापार एवं वाणिज्य • ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक विकास • यातायात • संचार	24
3.	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • भारत में शिक्षा का विकास • प्रेस का विकास	33
4.	1857 **तक ब्रिटिश प्रशासन** • ब्रिटिश प्रेसीडेंसी • **1857** तक संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास	41
इकाई - 3 (मेन्स) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीयों की प्रतिक्रियाएँ: किसान और आदिवासी विद्रोह, स्वतंत्रता का पहला संघर्ष, भारतीय पुनर्जागरण: राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और उसके नेता।		
5.	1857 **का विद्रोह** • पृष्ठभूमि • **1857** के विद्रोह के कारण • विद्रोह की प्रगति • विद्रोह का दमन • विद्रोह का प्रभाव	44

6.	1858 **के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम, **1858** • महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा • भारतीय परिषद अधिनियम, **1861** • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवाओं में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • देशी रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून	**50**

7.	**ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन**
	• नागरिक विद्रोह
	• राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन
	• सामंती विद्रोह
	• अन्य नागरिक विद्रोह
	  ○ जनजातीय विद्रोह
	  ○ किसान आंदोलन
		54

8.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण:** 1885-1905) • देश का एकीकरण • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	**65**
9.	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग/ उग्रवादी चरण** (**1905-1909)** • उग्रवादियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन • अखिल भारतीय मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (**1907)** • **1909** के मॉर्ले-मिंटो सुधार / **1909** का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • क्रांतिकारी गतिविधियां • प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन • होम रूल लीग आंदोलन	**72**
10.	**जन आंदोलन: गांधीवादी युग** (**1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • संघर्ष का उदारवादी चरण (**1894-1906)** • निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (**1906-1914)** • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और भारत सरकार अधिनियम, **1919** • रॉलेट एक्ट (**1919)**	**85**

	• जलियांवाला बाग नरसंहार (**13** अप्रैल**, 1919)** • खिलाफत आंदोलन • असहयोग खिलाफत आंदोलन • खिलाफत असहयोग आंदोलन का मूल्यांकन	
11.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925-1939)** • कांग्रेस-खिलाफत स्वराज पार्टी या स्वराज पार्टी • **1920** के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (**1927)** • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (**1927)** • नेहरू रिपोर्ट (**1928)** • इरविन की घोषणा (**31** अक्टूबर**, 1929)** • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर **1929)** • सविनय अवज्ञा आंदोलन (**1930)** • गांधी-इरविन समझौता (**1931)** • गोलमेज सम्मेलन • सविनय अवज्ञा आंदोलन का पुनरारंभ • सांप्रदायिक अवार्ड और पूना समझौता • भारत सरकार अधिनियम**, 1935** • वर्धा में कांग्रेस वर्किंग कमिटी(**CWC**) की बैठक (**10-14** सितंबर**, 1939)**	**94**
12.	**स्वतंत्रता की ओर (1940-1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (**1940)** • अगस्त ऑफर (**1940)** • व्यक्तिगत सत्याग्रह (**1941)** • क्रिप्स मिशन (**1942)** • भारत छोड़ो आंदोलन (**1942)** • राजगोपालाचारी फॉर्मूला (**1944)** • देसाई-लियाकत समझौता (**1945)** • वेवेल योजना (**1945)** • सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (**INA**) • आम चुनाव (**1945-46)** • नौसेना विद्रोह • कैबिनेट मिशन (**1946)** • प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और सांप्रदायिक दंगे • संविधान सभा का गठन (**1946)** • क्लेमेंट एटली का वक्तव्य • माउंटबेटन योजना (**3** जून **1947)**	**108**

ईकाई - 2 (प्रीलिम्स) स्वतंत्रता के बाद भारत का एकीकरण और पुनर्गठन।

इकाई - 3 (मेंस) एक गणतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत का उदय, राज्यों का पुनर्गठन। मध्य प्रदेश का गठन। आजादी के बाद की प्रमुख घटनाएं।

13.	**स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत**
	• सीमा आयोग
	• संसाधनों का विभाजन
	• देशी रियासतों का एकीकरण
	• इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन
	  ○ हैदराबाद
	  ○ जूनागढ़
	  ○ कश्मीर
	• कांग्रेस ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया?
		123

14.	**राज्यों का पुनर्गठन**
	• भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन
	  ○ स्वतंत्रता से पहले
	  ○ स्वतंत्रता के बाद
	• **1956** के बाद निर्मित नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश
		14

15.	**नेहरू की विदेश नीति** • भारतीय विदेश नीति का स्वतंत्रता-पूर्व दृष्टिकोण: • भारत की विदेश नीति को नियंत्रित करने वाले बुनियादी सिद्धांत • पंचशील • गुटनिरपेक्ष आंदोलन	**133**

16.	**स्वतंत्र भारत के बाद भूमि सुधार**
	• भूमि सुधार की आवश्यकता
	  ○ बिचौलियों का उन्मूलन
	• किरायेदारी अधिकार:
	  ○ भूमि सीलिंग
	  ○ भूमि चकबंदी
	• भूमि सुधार विफलता के कारण
	• आजादी के बाद भारत के युद्ध
	  ○ पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध: **1947-48**
	  ○ दूसरा भारत-पाकिस्तान युद्ध: **1965**
		138

17.	**आजादी के बाद भारत के युद्ध**
	  ○ पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध: **1947-48**
	  ○ दूसरा भारत-पाकिस्तान युद्ध: **1965**
		142

1 CHAPTER भारत में अंग्रेज़ी शासन की स्थापना

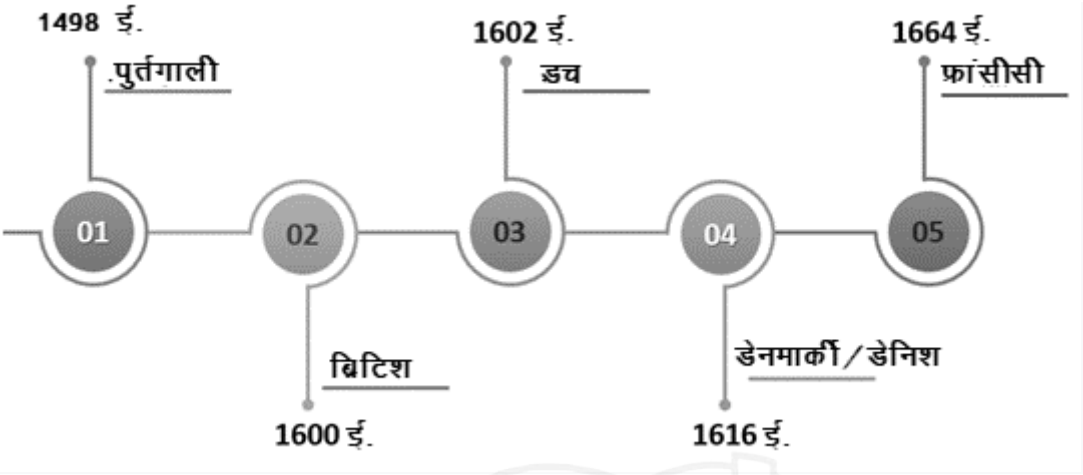

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- **उष्ण कटिबन्धीय वस्तुओं** जैसे-मसाले,रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी के बरतन आदि की **यूरोप में भारी माँग**
- 1453 ई. में **कुस्तुनतुनिया (तुर्की)पर उस्मानिया तुर्कों का कब्जा** जिससे यूरोपियों का एशियाई व्यापार बाधित हुआ तथा नये व्यापार मार्गों की आवश्यकता उत्पन्न हुई
- **पुनर्जागरण एवं वैज्ञानिक क्रान्ति** के फलस्वरूप यूरोप में समुद्री कम्पास, जहाज की चाल मापने वाला उपकरण, एस्ट्रोलैब (अक्षांश -देशान्तरमापक), त्रिकोणपाल, तोपों एवं बन्दूकों काअविष्कार हुआ। इससे समुद्री यात्राएँ काफी सुरक्षित हो गयी।
- **भारत की अपार संपदा:** मार्को पोलो और कुछ अन्य स्रोतों से यूरोपीय लोगों को भारत की अपार संपत्ति के बारे में पता चला।
- **युरोप में तीव्र औद्योगीकरण** तथा बाजार के विस्तार की खोज आकांक्षा
- तत्कालीन भारत में **कमज़ोर मुग़ल सत्ता** तथा नवीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय
- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- भारत में व्यापार करके अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथो में था इस व्यापार चक्र को तोड़ने के लिए नए व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकता थी
- **यूरोपीय शासकों** जैसे स्पेन की महारानी ईशाबेला तथा पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी आदि द्वारा **समुद्री खोजो को प्रोत्साहन**।
- **साहसी नाविकों का योगदान**: बार्थोलोमियो डियास (पुर्तगाली नाविक) ने 1487 ई. में उत्तम आशा अन्तरीप **'Cape of Good Hope'** की खोज की। 1492 ई. में स्पेनवासी कोलम्बस अमेरिका तथा 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** भारत पंहुचा।

पुर्तगाली

पुर्तगालियों का प्रारम्भिक अभियान

वास्कोडिगामा	• कैप ऑफ़ द गुड होप होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बंदरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर 17 मई 1498 को पंहुचा। • कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापर करने की अनुमति प्राप्त की • कन्नूर में, उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया
पेड्रो अल्वारेज़ कैबरेल	• 1500 में कालीकट में भारत में पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया • पुर्तगालियों पर अरब हमले का सफलतापूर्वक जवाब दिया • कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं
फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	• यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था । • 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। • उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनवाए। . • इसने ब्लू वाटर पॉलिसी तथा कार्टेज प्रणाली जारी की

अल्फांसो डी अल्बुर्कक (1509-1515)	• भारत में पुर्तगालियों का वास्तविक संस्थापक
	• 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसुफ आदिल शाह से गोवा छीना
	• पुर्तगालियों को भारत में बसने तथा भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया ।
	• पहला गवर्नर था जिसने अपने क्षेत्राधिकार में सती प्रथा पर रोक लगाई ।
	• पुर्तगाली सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की
	• विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय से इसके अच्छे सम्बन्ध थे ।
	• अधिकार का क्रम
	  ○ गोवा 1510
	  ○ मलक्का 1511
	  ○ हारमुज 1515
	• इसने गोवा को राजनितिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभारा

भारत में पुर्तगाली विस्तार

- मुंबई से दमन और दीव और फिर गुजरात तक गोवा के तट के आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया
- सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों की स्थापना की।
- 1579 के लगभग शाही फरमान ने उन्हें व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास बसा।

पुर्तगालियों का महत्व

सैन्य:

- बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
- फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
- स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

नौसेना तकनीक

- मल्टी-डेक वाले भारी जहाजों का निर्माण किया गया था इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा मिली।
- शाही शस्त्रागार और डॉकयार्ड का निर्माण

सांस्कृतिक कार्य

- सिल्वरस्मिथ और सुनार की कला गोवा में फली-फूली, फिलाग्री वर्कऔर धातु के काम में गहनों का केंद्र बन गया।
- पुर्तगालियों द्वारा चर्चों के आंतरिक भाग में लकड़ी का काम, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।

डच

डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन

- **कॉर्नेलिस हाउटमेन-** 1596 में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी का गठन - "यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड" मूल नाम - VOC (vereenigde Oost Indische Compagnie) वेरिंग्देओस्त इंडिस
- डच कम्पनी एक अर्धसरकारी कम्पनी थी जो एक निदेशक मंडल द्वारा चलाई जाती थी । इसमें कुल 17 व्यक्ति शामिल थे जिन्हें **Gentlemen** 17 कहा जाता था ।
- **कम्पनी के दो मुख्यालय थे** - एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बटाविया (इण्डोनेशिया)
- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई ।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की
- डचों ने भारत में मुख्यतः पूर्वी तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की जो निम्न हैं-

डचों द्वारा स्थापित कारखाने

- प्रथम - मसूलीपत्तनम
- द्वितीय - पत्तोपोली (निज़ामपट्नम)
- तृतीय- पुलीकट 1610
- अन्य कारखाने – सूरत (1616), विमलीपत्तनम, कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), कोचीन (1663), कासिम बाजार ,बालासोर ,नागापत्तनम (1658)

मुख्यालय

- पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केंद्र एवं मुख्यालय बनाया
- 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया

प्रमुख किला या फोर्ट

- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ईसवी में हुई
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना 1663 ईसवी में हुई

नोट

- डचों ने मलक्का या मसाला द्वीप जिसे इंडोनेशिया कहा जाता है इसको पुर्तगालियों से जीता एवं श्रीलंका को भी जीता
- डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बटाविया की स्थापना की
- मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 प्रतिशत वार्षिक चुंगी पर बंगाल ,बिहार और ओडिसा में व्यापार का एकाधिकार डचों को प्रदान किया
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता या कार्टल पर आधारित थी
- डच मूल रूप से काली मिर्च एवं अन्य मसालों के व्यापार में ही रूचि रखते थे ये मसाले मूलतः इंडोनेशिया में अधिक मिलते थे इसलिए वह डच कम्पनी का प्रमुख केंद्र बन गया
- डचों ने भारत में मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ो के व्यापार को अधिक महत्व दिया
- भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

भारत में डचों के अधीन व्यापार

- **नील उत्पादक प्रमुख क्षेत्र :** यमुना घाटी और मध्य भारत,
- **कपड़ा और रेशम**: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
- **साल्टपीटर:** बिहार
- **अफीम और चावल**: गंगा घाटी।
- काली मिर्च और मसालों का एकाधिकार व्यापार।

आयात-निर्यात

- डच सोना-चाँदी, पारा, ऊन तथा काँच की वस्तुएँ भारत से ले जाते थे ।
- वे भारत से सूती एवं रेशमी वस्त्र, धागा, नील, अफीम, मसाले, चीनी, धातु की बनी वस्तुएँ, शोरा आदि निर्यात करते थे ।

डचों के पतन कारण

- अंग्रेजो से प्रतिद्वंदिता
- डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था इसलिए कंपनी अपनी इच्छा अनुसार विस्तार नहीं कर सकती थी
- अंग्रेज़ो की नौसैनिक शक्ति डचों की तुलना में अधिक मजबूत थी
- डचों की भारत से अधिक रूचि इंडोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी
- कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अयोग्य प्रशासक
- 1759 ई. में बेदरा (बंगाल) के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की शक्ति भारत में समाप्त हो गयी। बाद में इन्होंने अपनी अधिकांश फैक्ट्रियाँ अंग्रेजो को बेच दी ।
- कोलाचेल की लड़ाई (1741) डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा की लड़ाई ने मालाबार क्षेत्र में डच सत्ता का पूर्ण सफाया कर दिया।

महत्व

- **भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है**

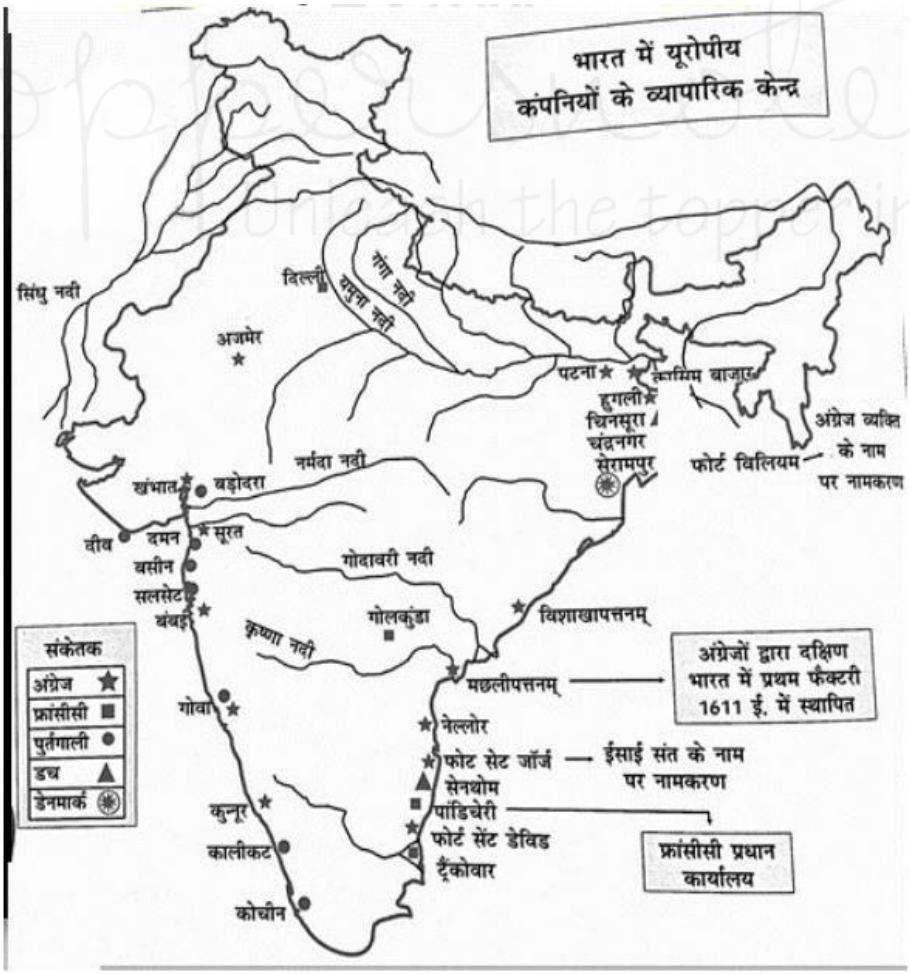

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा ,सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

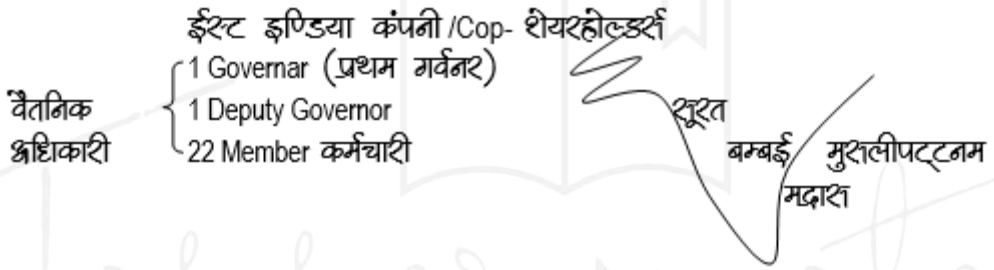

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियो की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना** - **1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

मुग़ल तथा अंग्रेज

- 1691 में औरंगजेब ने एक निश्चित राशि के बदले कंपनी को बंगाल में चुंगी रहित व्यापार की अनुमति दी।
- **शाही फरमान- मुग़ल सम्राट फर्रुखशियर** की बीमारी का इलाज कंपनी के एक डॉक्टर **विलियम हैमिल्टन** के द्वारा सफलता पूर्वक किया गया जिससे बादशाह ने खुश होकर एक **फरमान** जारी कर दिया जिसमे एक निश्चित **वार्षिक कर 3000 रुपये** चुकाकर निशुल्क व्यापर करने एवं मुंबई में कंपनी ढाले गए सिक्के को संपूर्ण मुग़ल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गयी। अब उन्हें वही कर देने पड़ेगे जो भारतीयों को देने पड़ते है**।**
- ब्रिटिश इतिहासकार और्म्स ने इसको **कंपनी का अधिकार पत्र या मैग्राकार्टा** कहा**।**
- बंगाल के नबाव मुर्शीद कुली खां ने फर्रुखशियर द्वारा दिए गए फरमान के बंगाल में स्वतंत्र प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास किया
- मराठा सेना नायक **कान्होजी आगरिया** ने पश्चमी तट पर अंग्रेज़ो की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया।

बंगाल में विस्तार

- बंगाल में कारखाने**: हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना** और **राजमहल।**
- **सुतानती,कालिकाता और गोविंदपुर** तीनो गांव को मिलाकर **जॉब चार्नोक** ने कलकत्ता शहर की नीव रखी और कंपनी ने यही पर **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की और **चार्ल्स आयर को प्रथम प्रेसीडेंट** नियुक्त किया गया ।
- कलकत्ता को अंग्रेज़ो ने 1700 में पहला प्रेसीडेंट नगर घोषित किया। 1774 से 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।

फ्रांसीसीयों का आगमन

फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी

- भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति
- फ्रांस के सम्राट **लुई 14वे** के मंत्री कॉल्बर्ट ने **1664** में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे **'The compaginie des Indes Orientales'** कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- प्रथम फ्रांसिसी फैक्ट्री **- सूरत में 1668** में **फ्रांसिस केरॉन** द्वारा
- **1669** में **मसूलीपट्टनम** में दूसरी फ्रैंच फैक्ट्री की स्थापना की
- **'पांडिचेरी' की नींव** -1673 में कंपनी के निदेशक **फ्रेंको मार्टिन तथा लेस्पिने** ने **वलिकोण्डपुरम के सूबेदार शेरखान लोदी** से कुछ गॉव प्राप्त कियेजिसे कालान्तर में **पांडिचेरी** कहा गया
- **1673** में बंगाल के **नबाब शाइस्ता खान** ने फ्रांसिसीयो को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की प्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गयी ।
- पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का **मुख्यालय** बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया सितंबर 1697 में संपन्न हुई रिसविक की संधि से पांडिचेरी फ्रेंच को वापस मिला
- पांडिचेरी के कारखाने में ही **मार्टिन** ने **फोर्ट लुई** का निर्माण कराया**।**
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मारीशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराईकल पर अधिकार कर लिया गया ।
- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार
- 1742 ई. के पश्चात व्यापारिक लाभ कमाने के साथ साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वकांक्षाए भी जाग्रत हो गई । परिणामस्वरुप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया । इन युद्धों को **'कर्नाटक युद्ध'** के नाम से जानते है ।

ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

- भारत में एंग्लो-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित और भ्रमित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह बूढ़े थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से लड़ने में लगे हुए थे।अत: एंग्लो फ्रेंच प्रतिद्वंद्विता की परिणीति कर्नाटक युद्धों के रूप में हुई

फ्रांसीसियों की पराजय का कारण

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी होने के कारण निर्णय लेने मे विलंब
- अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव
- नौसैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिशकंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ।

महत्व

- राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

डेनिश का भारत में आगमन

- **डेनमार्क** की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना **1616** में की गई थी |
- ये भी व्यापार के उद्देश्य से यह भी भारत में आये
- पहली फैक्ट्री - त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) 1620 में
- दूसरी फैक्ट्री - सीरमपुर (बंगाल) 1676 में
- 1745 में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेज़ो को बेच दी एवं भारत से चले गए |

कर्नाटक युद्ध

- कोरोमंडल समुद्र तट पर स्थित क्षेत्र जिसे कर्नाटक या कर्णाटक कहा जाता था। परंतु अधिकार को लेकर इन दोनों कंपनियों में लगभग बीस वर्ष तक संघर्ष हुआ।
- कोरोमंडल समुद्रतट पर स्थित किलाबंद मद्रास और पांडिचेरी क्रमशः अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बस्तियाँ थी। तत्कालीन कर्नाटक दक्कन के सूबेदार के नियंत्रण में था, जिसकी राजधानी आरकाट थी।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

- **कारण** -आस्ट्रिया के उतराधिकार युद्ध का विस्तार ।
- तात्कालिक कारण - अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहांजों पर अधिकार कर लेना। बदलें में मारीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बुर्डोने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया।
- **नेतृत्व -** अंग्रेजों का नेतृत्व बर्नेट तथा फ्रांसीसियों का डूप्ले कर रहे थे ।
- **परिणाम -** कर्नाटक के नवाब की सहायता से युद्ध में फ्रांसीसी विजयी हुए । इस युद्ध में नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।
- **संधि-** 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) यह युद्ध अडयार नदी के तट पर फ्रांसीसियों (डूप्ले) तथा कर्नाटक के नबाव (अनवरुद्दीन) के बीच हुआ जिसमें डूप्ले विजयी हुआ।

- **युद्ध का कारण -** डूप्ले द्वारा नवाब से किये गये वादे से पीछे हटना
- महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना का फ्रांसीसियों पर आक्रमण, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।
- जून,1748 ई. में अंग्रेज रियर-एडमिरल बोस्काबेन के नेतृत्व में एक जहांजी बेडे ने पांडिचेरी को घेरा,परंतु सफलता नहीं मिली।

Note: यह प्रथम युद्ध था जिसमें किसी यूरोपीय शक्ति ने आधुनिक काल में किसी भारतीय शासक को हराया था ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)

कारण:- 1. हैदराबाद तथा कर्नाटक राज्य में उत्तराधिकार का मुद्दा ।

हैदराबाद - हैदराबाद में उत्तराधिकार को लेकर निजाम आसफ़जाह के पुत्र -नासिर जंग और भतीजे मुजफ़्फ़रजंग (आसफजहा का पौत्र) के तथा कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चंदा साहिब के बीच विवाद । इसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी भी कूद पड़े । फलत: दो गुट बन गये।डूप्ले ने चंदा साहिब तथा मुजफ्फर जंग को तथा अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को समर्थन प्रदान किया।

2. अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षा/प्रतिस्पर्द्धा

परिणाम:- पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।

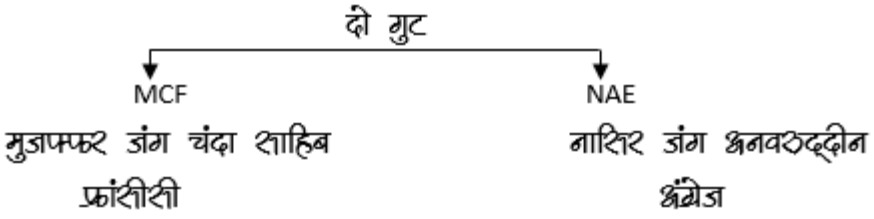

अम्बर का युद्ध (1749 ई.) -

- **1749 में** फ्रेंच सेना की सहायता से एक युद्ध में **चंदासाहब ने अंबर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार** डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया तथा चंदा साहिब कर्नाटक के अगले नवाब बने।अनवरुद्दीन का पुत्र **मुहम्मद अली** युद्ध में बचकर भाग गया और उसने **त्रिचनापल्ली** में शरण ली।
- लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ।
- 1750 में नासिर जंग भी फ्रेंच सेना से संघर्ष करता हुआ मारा गया **और मुजफ्फर जंग हैदराबाद** का नबाब बना दिया गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था।
- इसी बीच **राबर्ट क्लाइव** ने 1751ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया।
- फ्रांसिसीयो ने चांदा साहब की सेना की साथ मिलकर दुर्ग को घेर लिया अंग्रेजो की तरफ से क्लाइव इस घेरे को तोड़ने में असफल रहा और क्लाइव ने अपनी सूझ बूझ से कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर अधिकार कर लिया
- **1752** में **स्ट्रिगर लॉरेंस** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने त्रिचनापल्ली को बचा लिया और फ्रांसिसी सेना ने अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।
- डुप्ले को वापस बुला लिया गया तथा 1754 में **गोडेहू** अगला फ्रांसिसी गवर्नर बनकर भारत आया। पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।
- डूप्ले के बारे में **जे.और.मैरियत** ने कहा कि **'डूप्ले ने भारत की कुंजी मद्रास में तलाश कर भयानक भूल की, क्लाइव ने इसे बंगाल में खोज लिया।**

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)

- **कारण:** यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ होना । तात्कालिक कारण - क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार करना।
- **नेतृत्व:** फ्रांसीसी (काउण्ट लाली) एवं अंग्रेज (आयरकूट)
- **परिणाम:-** 22 जनवरी 1760 ई. के वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह पराजित किया अंग्रजो ने भारत में अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त कर सबसे बड़ी शक्ति बनकर सामने आये अब उनका मुकाबला केवल भारतीय राजाओ से था।
- **संधि -** 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ ।

फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की जीत के कारण

- **दोनों कम्पनियों के ढाँचे में अन्तर -** सरकार एवं निजी
- **यूरोप में फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति एवं स्थायित्व काफी मजबूत था** (पार्लियामेण्ट (अंग्रेज) एवं निरंकुश राजशाही (फ्रांस)
- ब्रिटेन में कृषि एवं **औद्योगिक क्रान्ति** के परिणामस्वरूप फ्रांस की अपेक्षा आर्थिक समृद्धि अधिक बेहतर
- हिन्द महासागर में अंग्रेजी नौसेना का काफी दबदबा। उन्होनें प्रारम्भ से ही मद्रास, बम्बई, कलकत्ता के नौसैनिक ठिकानों का विकास किया।
- फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों ने प्रारम्भ से ही **व्यापार-वाणिज्य, राजस्व प्राप्ति** पर विशेष ध्यान दिया**।** अंग्रेजों (क्लाइव) की बंगाल को आधार बनाकर विस्तार की रणनीति

अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण

- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अन्य कंपनियों के विपरीत एक निजी कंपनी थी।
- ब्रिटेन के पास विशाल एवं अत्याधुनिक नौसेना होना।
- ब्रिटेन में कृषि एवं औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक सम्पन्नता
- ब्रिटेन के पास एक अनुशासित और तकनिकी रूप से विकसित सेना का होना
- फ्रांस, डच आदि के विपरीत ब्रिटेन में एक स्थायी शासन की उपस्थिति
- अन्य कंपनियों की रूचि ईसाई धर्म के प्रसार में अधिक थी, जबकि अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी धर्म से ज्यादा व्यापार विस्तार में रूचि रखते थे।
- ऋण बाजार का उपयोग- **दुनिया के पहला केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड** की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाजारों में बेचने के लिए की गई थी।

भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार

- मुगल शासन के पतन के दौरान, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने **18वीं शताब्दी के मध्य** तक एक राजनीतिक शक्ति विकसित की।
- अंग्रेज व्यापारियों के रूप में आए, परन्तु उन्होंने महसूस किया कि भारतीय व्यापार से लाभ प्राप्त करने के लिए, बलपूर्वक **राजनीतिक सत्ता** हासिल करनी होगी।

भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताए

कंपनी की क्षेत्रीय और वाणिज्यिक महत्वाकांक्षाएं	• कंपनी ने भारत में आक्रामक व्यापारिक नीति का पालन किया।
कंपनी का बढ़ता साहस	• कमजोर शासकों का सामना करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को सशक्त बनाया। कंपनी ने बंगाल में फर्रुखसियार द्वारा दिए गए विशेषाधिकारों का दुरुपयोग किया तथा राज्यों के नियमो को तोडा ।
भारतीय शक्तियों में एकता का अभाव	• क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा विस्तार के लिए लडे युद्धों ने यूरोपीय लोगों को भारतीय मामलों में दखल देने का मौका दिया।
कंपनी की गठबंधन कूटनीति	• कंपनी ने विजयदुर्ग स्थित तुलाजी आंग्रे को हराने के लिए पुर्तगालियों और बाद में पेशवा (1756) के साथ गठबंधन किया। बंगाल में कंपनी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को खरीदकर सिराजुद्दौला को अलग कर दियाऔर टीपू सुल्तान के खिलाफ युद्ध में हैदराबाद के निजामों को शामिल कर लिया।
बंगाल के संसाधन	• बंगाल की विजय (1757-65) ने भारत के अन्य क्षेत्रों को जीतने के लिए आवश्यक धन, संसाधन और सामग्री प्रदान की।
भारतीय शासकों का अपर्याप्त आधुनिकीकरण और संस्थागत कमजोरियाँ	• भारतीय राज्य कंपनी की तरह सैन्य वित्त की एक प्रणाली विकसित करने में विफल रहे। यूरोपीय भाड़े के सैनिकों पर अत्यधिक निर्भरता कुछ मामलों में घातक साबित हुई।
भारतीय शासकों से जनता का अलगाव	• भारतीय राज्यों ने अपने प्रतिरोध को जन प्रतिरोध में बदलने की कोशिश नहीं की इसलिए भारतीय किसानों को अपने शासकों से सहानुभूति नहीं थी। • मराठा, और पिंडारियो की लूटपाट के कारण वे लोगो को प्रिय नही थे ।

बंगाल

- एशिया से लगभग **60% ब्रिटिश आयात** में बंगाल का माल शामिल था।
- 1700 में, मुर्शीद कुली खान बंगाल के दीवान बने और 1727 में अपनी मृत्यु तक शासन किया।
- उनके बाद **उनके** दामाद **शुजाउद्दीन** ने 1739 तक शासन किया।
- उसके बाद, एक वर्ष (1739-40) के लिए, **सरफराज खान** मुर्शिद कुली खान का एक अक्षम पुत्र, शासक बना; **अलीवर्दी खाँ ने उसकी हत्या** कर दी।
- अलीवर्दी खान ने 1756 तक शासन किया और **मुगल सम्राट को नजराना देना** भी बंद कर दिया। इन शासकों के शासन में बंगाल ने अभूतपूर्व प्रगति की।
- **अंग्रेजों के व्यापारिक हित** बंगाल सरकार तथा अंग्रेज दोनों के बीच टकराव का मुख्य कारण बन गए।
- **1757 और 1765 के बीच एक छोटी अवधि के दौरान**, सत्ता धीरे-धीरे बंगाल के नवाबों से अंग्रेजों को हस्तांतरित हो गई ।

बंगाल के नवाब और अंग्रेज

- **मुर्शिद कुली खान** को औरंगजेब ने **बंगाल का दीवान नियुक्त** किया था।
- **शुजाउद्दीन खान** ने बंगाल का हिस्सा बनने के लिए **बिहार के सूबे पर कब्जा** कर लिया।
- **सरफराज खान** ने **आलम-उद-दौला हैदर जंग की उपाधि** धारण की।
- **अलीवर्दी खान** ने **सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी** नामित किया।
- **सिराजुद्दौला** ने अंग्रेजों को कलकत्ता में अपने कारखानों की किलेबंदी करने से रोक दिया जिसके कारण **1757 में प्लासी की लड़ाई** हुई।
- **मीर कासिम** ने अंग्रेजों **को बर्दमान, मिदनापुर और चटगांव की जमींदारी** प्रदान की।
- **मीर जाफर** ने अंग्रेजों **को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मुक्त व्यापार** और 24 परगना के जमींदार का अधिकार दिया।
- **नज्म-उद-दौला** मीर जाफर के पुत्र थे और उन्हें **'दोहरी शासन प्रणाली'** की अवधि के दौरान **अंग्रेजों का कठपुतली शासक** बनाया गया था।

ब्लैक होल घटना (20 जून, 1756)
हॉलवेल के अनुसार, सिराजुद्दौला ने 20 जून की रात 146 अंग्रेज बंदियों को **18 फुट लंबी** एवं 1**4 फुट 10 ईंच चौड़ी** कोठरी में बन्द कर दिया था। अगले दिन जब देखा तो हालवेल सहित **23 व्यक्ति** ही जिन्दा ही बचे थे। अंग्रेज इतिहासरों ने इस घटना को **ब्लैक हाल त्रासदी** कहा है।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.)

- क्लाइव ने नवाब के संबंधियों और अधिकारियों जैसे **मीरजाफर**(सैन्यप्रमुख), **मणिकचंद** (कलकता का प्रभारी), **अमीनचंद** (पूंजीपति), **जगतसेठ** (बैंकर), **घसीटीबेगम** (नवाब की मौसी) आदि को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
- **23 जून 1757** को, सिराजुद्दौला और अंग्रेजों की सेनाएं प्लासी में मिलीं।
- सिराजुद्दौला के **सेनापति मीर जाफर ने युद्ध में भाग नहीं** लिया।
- बंगाल के सबसे अमीर बैंकर **जगत सेठ ने भी सिराजुद्दौला की मदद करने से मना** कर दिया था
- **सिराजुद्दौला पराजित** हुआ, कैद हुआ और बाद में मारा गया।
- अंग्रेजों ने **मीर जाफर को बंगाल का नवाब** बनाया।
- प्लासी के बाद**, अंग्रेजों ने बंगाल के व्यापार और वाणिज्य पर एकाधिकार** कर लिया।

प्लासी के युद्ध के प्रभाव

- अंग्रेजों **ने मीर जाफर को कठपुतली** बना दिया और उससे लगातार पैसे की मांग की।
- उचित रूप से **सुसज्जित सैन्य बल के रखरखाव के लिए प्रदेशों का अनुदान प्राप्त** किया
- **सर्वोच्च नियंत्रण क्लाइव** को दिया गया।
- कलकत्ता पर **अंग्रेजी की संप्रभुता को मान्यता** दी गई और नवाब के दरबार में एक ब्रिटिश अधिकारी नियुक्त किया गया।

बक्सर का युद्ध (अक्टूबर 1764)

- मीरजाफर (1763-65) के समय **बक्सर का युद्ध** हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व **हैक्टर मुनरो** ने किया, तो दूसरी **तरफ अवध का नवाब शुजाउद्दौला** मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय एवं बंगाल का अपदस्थ नवाब **मीरकासिम** था।

त्रिगुट	अंग्रेज
मुगल बादशाह + अवध का नवाब+ बंगाल का नवाब	हेक्टर मुनरो
40-50 हजार की सेना	1027 की सेना

- दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ ।
- श्रेष्ठ रणनीति+कुशल नेतृत्व एवं सैनिक क्षमता द्वारा अंग्रेजों ने जीत हासिल की ।

बक्सर के युद्ध के परिणाम

- बक्सर ने अंग्रेजों की **सैनिक क्षमता की सर्वश्रेष्ठता** को स्थापित किया ।
- बक्सर विजय के बाद अंग्रेजों को चुनौती देने वाली कोई मजबूत शक्ति नहीं रह गई क्योंकि इसके बाद अवध हमेशा के लिए अंग्रेजों के चंगुल में आ गया। **मुगल बादशाह** की स्थिति कमजोर और **रबर स्टाम्प** जैसी रह गयी थी ।वह कम्पनी का **पेन्शनकर्ता** बन गया तथा **बंगाल का नवाब एक कठपुतली** बन गया।
- बंगाल, बिहार, उडीसा में **द्वैध शासन** स्थापित हुआ।
- बक्सर विजय के बाद अंग्रेज भारत में ही नहीं बल्कि हिन्द महासागर के महत्वपूर्ण रणनीतिक ठिकानों **(दक्षिणी-पूर्वी एशिया, मॉरीशस, मालदीव, श्रीलंका)** तथा **मिस्र एवं पश्चिम एशिया** में भी मजबूत हुए ।
- बक्सर के बाद भारत में कंपनी को राज चलाने की आवश्यकता के लिए अधिकारियों की जरूरत पडी। फलतः अंग्रेज मध्यमवर्ग के लिए भारत में नौकरियों के अवसर सृजित हुए।

इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त 1765 ई.)

1. अवध के नवाब के साथ संधि

(a) अवध के नवाब पर 50 लाख रु. युद्ध का हर्जाना लगाया गया ।
(b) अवध से कम्पनी ने कड़ा तथा इलाहाबाद का जिला ले लिया ।
(c) बनारस के एक जागीरदार बलवंत सिंह को अवध के नवाब से जागीर वापस करने के लिए कहा गया ।
(d) कम्पनी ने बदले में **अवध को सुरक्षा की गारंटी** दी ।
(e) अवध के खर्च पर उसकी राजधानी में ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी को तैनात किया गया।

> कम्पनी ने अवध का प्रत्यक्ष विलय नहीं किया। कम्पनी अवध को एक मध्यवर्ती राज्य (Buffer State) के रूप में रखना चाहती थी ताकि अवध के पीछे मराठों तथा अन्य शक्तियों के हमले से खुद की रक्षा की जाये। इसे ही सुरक्षित घेरे की नीति कहा गया है।

2. मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के साथ संधि एवं शर्तें

(a) अवध के नवाब से लिये गये कड़ा एवं इलाहाबाद का क्षेत्र मुगल बादशाह को दे दिया गया।
(b) मुगल बादशाह ने कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी (भू-राजस्व वसूली का अधिकार) प्रदान की।
(c) बदले में कम्पनी ने बादशाह को 26 लाख रु. वार्षिक पेन्शन देने का वचन दिया ।

3. बंगाल के नये नवाब नजमुद्दौला के साथ संधि

नये नवाब नजमुद्दौला को बंगाल के निजामत (प्रशासन) का अधिकार दिया गया लेकिन दीवानी का अधिकार (भूराजस्व वसूली) कम्पनी ने खुद अपने पास रखा। इससे बंगाल में प्रशासन में एक **दोहरा ढ़ाँचा** उपस्थित हुआ जिसे **द्वैध शासन** कहा गया है ।

बंगाल में द्वैध शासन

बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत कब हुई – **1765**

बंगाल में द्वैध शासन **लागू करने का श्रेय** किसे है – **रॉबर्ट क्लाइव**

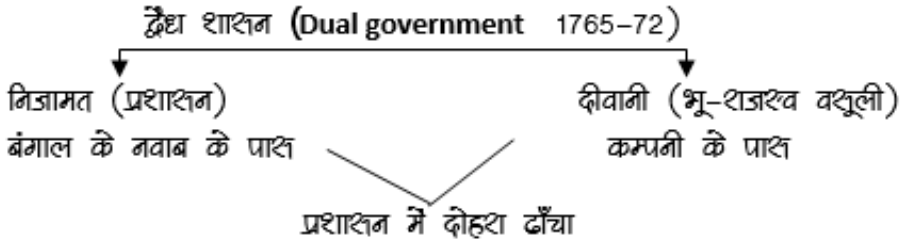

- कम्पनी को बिना दायित्व के लाभ प्राप्त हुआ ।
- निजाम को बिना लाभ के संपूर्ण दायित्व प्राप्त हो गया ।

मैसूर

वाडियार राजवंश

- 18वीं सदी में मैसूर में **चिक्का कृष्ण राज** का शासन था परन्तु यह कठपुतली मात्र राजा था। वास्तविक शक्ति इसके दो मंत्रियों **नंजराज** एवं **देवराज** के हाथ में थी।

हैदर अली का उदय

- 1722 ई. में मैसूर के कोलार में जन्मा हैदर अली मैसूर की सेना में एक साधारण अधिकारी था। बाद में हैदर अली को **डिंडीगुल** का फौजदार नियुक्त किया गया।
- हैदरअली ने डिंडीगुल में **फ्रांसीसियों के सहयोग** से **आधुनिक शस्त्रगार** की स्थापना की। (1755 ई. में)
- 1761 तक हैदरअली के पास मैसूर की समस्त शक्ति केन्द्रित हो गयी।
- **आधुनिक मैसूर** की स्थापना 1761 ई. में हैदर अली द्वारा की गई थी। वह सामान्य सिपाही से सेनापति बना और अंततः शासक बना।
- हैदर अली ने अपनी सेना को पुनर्गठित कर मजबूत बनाया। सेना में **हिन्दू तथा मुस्लिम सिपाहियों** की भर्ती की। **राजस्व बढ़ाने** का उपाय किया तथा एक मजबूत राज्य बनाने की कोशिश की।
- माधवराव के नेतृत्व में मराठों ने मैसूर पर हमला किया और 1764, 1766 और 1771 में हैदर अली को हराया।
- दक्कन में भारतीय ताकतों में हैदरअली पहला व्यक्ति था जिसने **अंग्रेजो को पराजित** किया।

आंग्ल-मैसूर युद्ध

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई.)	• यह युद्ध **हैदरअली** तथा अंग्रेजों, मराठा और निजाम की संयुक्त सेना के बीच हुआ। • हैदर ने मराठों को तटस्थ करने के लिए 35 लाख रु दिए और निजाम को आर्कोट के नवाब के खिलाफ अपने सहयोगी में बदल दिया। • 4 अप्रैल, 1769 को **अंग्रेजों ने हैदर के साथ मद्रास की संधि** की। • संधि के अनुसार हैदर अली पर किसी अन्य शक्ति द्वारा हमला किए जाने की स्थिति में अंग्रेजों द्वारा मदद दी जाएगी।
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.)	• 1771 ई.में जब मराठों ने मैसूर पर हमला किया, तो अंग्रेजों ने मैसूर की सहायता नहीं की। अतः पहले की गई मद्रास की संधि का उल्लंघन हुआ। फलतः आंग्ल मैसूर संबंध तनाव पूर्ण हुए। और हैदरअली ने पुनः अंग्रेजों के विरूद्ध मराठों एवं निजाम से संधि कर ली। • अमेरिकी क्रांति के दौरान अमेरिका के साथ फ्रांस भी था और दोनों मिलकर ब्रिटिश के विरूद्ध सैन्य अभियान कर रहे थे। इस तरह ब्रिटिश फ्रांसीसी संबंध संघर्ष पूर्ण थे। ऐसे भारत में भी स्थित दोनों कंपनियों के बीच तनाव बढा। इसी क्रम में ब्रिटिश ने फ्रांसीसी बस्ती माहे पर नियंत्रण करना चाहा, जो हैदर के क्षेत्र में स्थित थी। अतः आंग्ल-मैसूरयुद्ध शुरू हुआ। • वस्तुतः इस समय भारत में मराठों के साथ भी अंग्रेजों का युद्ध चल रहा था तो साथ ही बॉम्बे एवं बंगाल के ब्रिटिश अधिकारियों के बीच मतभेद व्याप्त थे, तो दूसरी तरफ अमेरिकी स्वंतत्रता संग्राम के परिणाम स्वरूप अमेरिका, ब्रिटिश के हाथों से आजाद हो रहा था और इसी क्रम में फ्रांस, हॉलैण्ड और स्पेन के साथ भी ब्रिटेन का संघर्ष चल रहा था। इस तरह भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही परिस्थितियाँ अंग्रेजों के प्रतिकूल थी किन्तु भारत में मौजूद वारेन हेस्टिंग्स ने कुशलता से इस संकट का समाधान निकाला तथा निजाम और मराठों को अपने पक्ष में किया। वस्तुतः मराठों के साथ सालबाई की संधि

	कर उसे युद्ध से अलग किया। • 1780 में हैदरअली के कर्नाटक पर आक्रमण कर द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध की शुरूआत की एवं अंग्रेज जनरल वेली को अरंदी के युद्ध में परास्त किया। • 1781 ई. में हैदरअली एवं आयरकूट के बीच पोर्टोनोवा का युद्ध हुआ जिसमें हैदरअली की हार हुई। • 1782 ई. में हैदरअली ने पुनः अंग्रेजी सेना को परास्त किया परन्तु युद्ध में घायल हो जाने से 7 दिसम्बर, 1782 ई. में हैदरअली की मृत्यु हो गयी। • हैदरअली की मृत्यु के बाद 1784 तक हैदरअली के पुत्र टीपू ने युद्ध जारी रखा। • 1784 ई. में मंगलोर की संधि से युद्ध समाप्त हुआ। यही संधि अंग्रेजो की तरफ से लॉर्ड मैकार्टनी और टीपू के बीच हुई, दोनों पक्षों ने एक दुसरे के जीते हुए क्षेत्र लौटा दिए और युद्ध बंदी मुक्त कर दिए।
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92)	• यह युद्ध अंग्रेज, निजाम व मराठों की संयुक्त सेना व टीपू के मध्य लड़ा गया। • इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल कार्नवालिस था। टीपूसुल्तान फ्रांसीसियों से संबंध बनाए हुए था। फलतः अंग्रेजों के साथ तनाव पैदा हुआ, तो दूसरी तरफ कार्नवालिस ने मित्र राज्यों की सूची मे मैसूर को शामिल नहीं किया। अतः दोनों के बीच तनाव बढ़ा। • इसी तरह त्रावणकोर राज्य पर टीपू ने हमला किया, जो ब्रिटिश का संरक्षित राज्य था। अतः मैसूर और अंग्रजों के बीच युद्ध शुरू हो गया। • इस युद्ध में अंग्रेज-निजाम और मराठों का त्रिगुट मैसूर के विरूद्ध बना। युद्ध में टीपू पराजित हुआ और 1792 मे श्रीरंगपट्टनम की संधि करनी पड़ी। • इस संधि के तहत टीपू का आधा राज्य अंग्रेजों को प्राप्त हुआ। युद्ध क्षति पूर्ति के रूप मे एक बड़ी धनराशि टीपू पर आरोपित की गई। इसके अतिरिक्त टीपू के दो पुत्र अंग्रेजों के पास बंधक रखे गए। इस तरह मैसूर की शक्ति को कमजोर कर दिया गया। इसी संदर्भ में कार्नवालिस ने कहा कि हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाए बगैर अपने शत्रु को पंगु बना दिया। • **महत्व** ○ वस्तुतः यदि कार्नवालिस द्वारा मैसूर राज्य का पूर्ण विलय कर लिया जाता, तो उसके अधिक क्षेत्रों को अपने युद्ध कालीन मित्रों निजाम और मराठों को दोनों को देना पड़ता जिससे वे शक्ति संपन्न हो सकते थे और ब्रिटिश के लिए चुनौती प्रस्तुत करते। ○ अतः इस चुनौती से बचने के लिए कार्नवालिस ने टीपू के साथ संधि की और उस का आधा राज्य प्राप्त किया और उसे कमजोर बना दिया । इस दृष्टि से श्रीरंगपट्टम की संधि एक दूरदर्शितापूर्ण कदम थी।
चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799 ई.)	• इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली था। इस समय टीपू फ्रांसीसियों से संबंध बनाऐ हुए था, तो दूसरी तरफ यूरोप में नेपोलियन मिस्र का अभियान कर रहा था। अतः अंग्रेजों को अपने भारतीय उपनिवेश की सुरक्षा की चिंता हुई। • ऐसे में वेलेजली ने फ्रांस से संबंध रखने वाली भारतीय शक्ति को समाप्त करना चाहा। • अंग्रेजों ने पुनः निजाम एवं मराठों से संधि कर ली। अंग्रेज सेना का नेतृत्व वैलेजली, हैरिस और स्टुअर्ट ने किया। • 4 मई, 1799 ई. को टीपू युद्ध में मारा गया एवं मैसूर की गद्दी पर आड्यार वंश के बालक कृष्णराज को बिठा दिया गया। और उससे सहायक संधि कर ली। • मैसूर विजय की खुशी में वैलेजली को मार्क्विस की उपाधि दी गयी। • इस विजय के पश्चात वेलेजली ने कहा कि पूर्व का साम्राज्य हमारे कदमों में है।

टीपू सुल्तान के बाद मैसूर

- वेलेस्ली ने मराठों को मैसूर साम्राज्य के **सूंडा** और **हारपोनेली** जिलों की पेशकश की लेकिन बाद में मना कर दिया।
- निजाम को **गूटी,गुर्रमकोंडा** और **चित्तलदुर्ग** जिले दिए गए।
- अंग्रेजों ने **कनारा, वायनाड, कोयंबटूर, द्वारापुरम** और **सेरिंगपट्टम** पर कब्जा कर लिया।
- मैसूर का नया राज्य पुराने हिंदू राजवंश **(वाडीयार)** को एक छोटे शासक **कृष्णराज III** के अधीन सौंप दिया गया था, जिन्होंने **सहायक गठबंधन** को स्वीकार कर लिया था।
- 1831 में **विलियम बेंटिक** ने कुशासन के आधार पर मैसूर पर अधिकार कर लिया।
- 1881 में **लॉर्ड रिपन** ने अपने शासक को राज्य बहाल कर दिया।

मराठा

- पेशवा मराठा संघ के प्रमुख थे और देश के एक बड़े हिस्से को नियंत्रित करते थे।
- सभी पेशवाओं में सबसे महान माने जाने वाले **बाजीराव प्रथम (1720-40)** ने तेजी से फैलती मराठा शक्ति को व्यवस्थित करने और कुछ हद तक **सेनापति दाबोली** के नेतृत्व में मराठो के क्षत्रिय वर्ग (पेशवा ब्राह्मण थे) को संतुष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण **मराठा सरदारों का संघ** शुरू किया
- मराठा परिवार जो प्रमुख रूप से उभरे- (i) **बड़ौदा के गायकवाड़** (ii) **नागपुर के भोंसले** (iii) **इंदौर के होल्कर** (iv) **ग्वालियर के सिंधिया** और (v) **पूना के पेशवा**।
- संघ ने बाजीराव प्रथम से माधवराव तक सौहार्दपूर्ण ढंग से काम किया लेकिन **पानीपत की तीसरी लड़ाई** (1761) ने सब कुछ बदल दिया।
- पानीपत में हार और बाद में 1772 में **पेशवा माधवराव प्रथम** की मृत्यु ने संघ पर पेशवाओं के नियंत्रण को कमजोर कर दिया।
- पेशवा माधव राव प्रथम (1761-72) की की मृत्यु के उपरांत उसके **छोटे भाई नारायणराव** पेशवा बना।
- नारायणराव का अपने चाचा **राघोबा** से गद्दी को लेकर लंबे समय तक संघर्ष चला जिसमें अंततः **राघोबा\ रघुनाथराव** ने **1774 में नारायणराव** की हत्या कर दी किन्तु फिर भी वह पेशवा बनने में सफल नहीं हुआ।
- 1774 ई. में पेशवा नारायणराव की हत्या के बाद उसके पुत्र माधवराव नारायण को पेशवा की गद्दी पर बैठाया गया।
- यह **अल्पायु** था। अतः माधवराव द्वितीय के लिए मराठा सरदारों ने एक **काउंसिल ऑफ रीजेंसी या बारह भाई परिषद** (12 सदस्यों की एक परिषद) का गठन किया जिसके प्रमुख **नाना फड़नवीस** था

आंग्ल मराठा युद्ध

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82)	• माधवराव द्वितीय के पेशवा बनने पर **रघुनाथराव** असंतुष्ट होकर अंग्रेजों के पास चला गया और उसने **सूरत की संधि** (1775) की। इसी के साथ अंग्रेज **मराठों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप** करने लगे फलतः अंग्रेजों के साथ मराठों का युद्ध शुरू हुआ। • ब्रिटिश कलकत्ता काउंसिल ने सूरत की संधि (1775) की निंदा की और **कर्नल अप्टन** को इसे रद्द करने और एक नई संधि (**पुरंदर की संधि, 1776**) बनाने के लिए पुणे भेजा। • 1777 में, **नाना फडनवीस** ने पश्चिमी तट पर फ्रांसीसीयों को एक बंदरगाह देकर संधि का उल्लंघन किया। अंग्रेजों ने पुणे की ओर एक बल भेजकर जवाबी कार्रवाई की। • मराठा सेना की कमान **महादजी सिंधिया** (उर्फ **महादजी शिंदे**) के पास थी।इसमें मराठो ने अंग्रेजो को भारी क्षति पहुचाई। • अंग्रेजी ने **वडगांव की संधि** (1779 ई.) पर हस्ताक्षर किए, जिसने 1775 के बाद से अंग्रेजों द्वारा अधिग्रहित सभी क्षेत्रों को छोड़ने के लिए बॉम्बे सरकार को मजबूर किया। • **सालबाई की संधि (1782)** - बंगाल में गवर्नर-जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने वडगाँव की संधि को खारिज कर दिया और कर्नल गोडार्ड के अधीन एक बड़ी सेना भेजी। सिंधिया